





हो प्रवर्त्तनी  
भी ह्युत्तु  
हान न्य हे  
हो नो वर्ज  
स्ती व ह्य  
स्तोम श हे  
तरी प्रे दे  
त श्री उ दे  
नो वि प्रा  
वे त र यो  
शः ए त हि  
क्षो पा दो

विज्ञा गो नि  
ने ले ते पा  
या त्तु पा द  
दि ती व श  
द श्चु वा क  
प न्न न त उ  
ट स्य द्या वि  
पु रि द्वा र  
त ह्य रो मु के  
न्यै र तो ल  
हे र्द के ते घ  
त नी न हा श



सोम  
श्री  
ज्ञान  
श्रीने  
स्त्री  
श्री  
त्ररं  
तश्च  
गो  
वेत  
शः  
द्वो

देवपातनादिनागोनि  
योर्बोद्धवमित्येतेपादा  
रं॥३॥ अत्रुहात्रेणुपादा  
प्रदंन्यत्रदिहोदितोवश  
तयोसिमधुलेदश्चुताक  
गु अत्तुर्वैष्टपनागतं  
कीनुदात्रेषटश्चस्वाहि  
दशै॥एकाश्रीश्रीहादु  
नस्योतममहारागुवे  
तीतैर्वाएष्यैरतोक्त्वा  
एकएकपदैरेकैतेषा  
वस्येपादतनराश





हो प्रवर्णाश्रमं योः  
भीक्षुः ३ छं दभाः  
ज्ञानस्य हेतवः। वि  
हो नो कर्त्तुं वि  
स्त्री वं न स्त्री को क  
स्तोमश रेप रेधा।  
त्ररां प्रे रे ब्र लति  
तश्चैतु देशः। पा  
नौ वि घा त्रे पु न  
येतरयो र्हेतु व ह  
शः। एतद्विका रा  
दो पा दो द्विप दो

नां विना गो नि स  
प्र मि खि ते पा द  
प तु सा त्रे तु पा द  
दि हो दि तो वा स  
धु छं द म्भु ता व  
वै ट प ना रु त वं  
त्र ष ट स्त स्त्री दि  
को रो शी द्वा र्दि  
त म म च्च रं गु वी  
ए यं चै र वो ल्य  
प र्दे र्द क्ते वा  
प द त री न द श

